वक्त अच्छा
जरूर आता है,
मगर वक्त पर ही
आता हैं।
– अज्ञात

यह खूनी समाज

जीवन के अनेक प्रसंगों को समाज अपनी गिरफ्त में रखना चाहता है। पिछले एक–दो दशकों के सामाजिक–आर्थिक विकास से कुछ बंधन शिथिल हुए हैं। लड़कियों को घर से बाहर निकलने, शिक्षा पाने, नौकरी करने की आजादी मिली है।

नीति मोहन

हमारे देश में साल दर साल होने वाली हत्याओं की दर में कमी आई है लेकिन प्रेम प्रसंग के कारण हत्या के मामले बढ़ रहे हैं। हाल में जारी राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े बताते हैं कि साल 2001 से 2017 के बीच देश में ज्यादातर हत्याएं प्रेम और विवाह से जुड़े मामलों में दर्ज की गई हैं। हत्या जैसे अपराध के पीछे आम तौर पर तीन मकसद देखे गए हैं, एक तो निजी रंजिश, दूसरा संपत्ति विवाद और तीसरा प्रेम प्रसंग। पहले दो मामलों में हत्याएं अब भी ज्यादा होती हैं, लेकिन उनकी संख्या साल दर साल कम हो रही है। 2001 से 2017 के बीच निजी रंजिश के कारण हुई हत्याओं में 4 प्रतिशत और प्रॉपर्टी के झगड़े में हुए मर्डर में 12 फीसदी की कमी आई है। लेकिन प्रेम प्रसंग में हुई हत्याओं में 28 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।

प्रेम में हत्या के बढ़ते मामले कहीं न कहीं हमारे समाज के मूल्यगत ठहराव की ओर इशारा कर रहे हैं। प्रेम करने की आजादी समाज में अब भी हर किसी को नहीं मिल सकी है। जीवन के अनेक प्रसंगों को समाज अपनी गिरफ्त में रखना चाहता है। पिछले एक–दो दशकों के सामाजिक–आर्थिक विकास से कुछ बंधन शिथिल हुए हैं। लड़कियों को घर से बाहर निकलने, शिक्षा पाने, नौकरी करने की आजादी मिली है। लड़के–लड़कियों के आपस में मिलने–जुलने के अवसर बढ़े हैं। लेकिन स्त्री–पुरुष संबंधों को लेकर समाज की पिछड़ी जेहनियत में बुनियादी बदलाव नहीं आया है। इसी तरह जाति–संप्रदाय जैसे बंधन ऊपरी तौर पर जरूर ढीले दिखते हैं पर अवचेतन में वे पहले जितने ही मजबूत बने हुए हैं।

प्रेम में हत्या के भी कई पहलू हैं, जैसे प्रेम त्रिकोण में हत्या। पुरुषसत्ता की सोच आज भी इस कदर हावी है कि एक पुरुष यह सहन नहीं कर पाता कि कोई स्त्री उसका प्रेम प्रस्ताव ठुकरा कर किसी और को अपना ले। ऐसे में वह उस स्त्री की या/और उसके प्रेमी की हत्या कर देता है। इसका दूसरा पहलू है ऑनर किलिंग। मां–बाप, रिश्तेदार, कुनबा अक्सर यह सहन नहीं कर पाता कि बच्चे अपने जीवन के बारे में खुद फैसले करें और जाति, धर्म के बंधनों को नकार दें। खासकर लड़कियों के किसी अन्य समुदाय के लड़के से प्रेम और विवाह करने से सबकी इज्जत चली जाती है। इसलिए 'इज्जत' बचाने के लिए परिवार द्वारा ऐसी लड़कियों को मार दिए जाने की घटनाएं घट रही हैं।

एक अध्ययन के मुताबिक 2005–12 के बीच हुई ऐसी हत्याओं में 44 फीसदी अंतरजातीय विवाह के कारण हुईं जबकि 56 पर्सेंट हत्याएं महज इसलिए हुईं कि परिवार को लड़के–लड़कियों का अपने फैसले खुद लेना मंजूर नहीं था। जिस समाज में हत्या से इज्जत बचती हो, उसे सभ्य और आधुनिक कैसे कहा जा सकता है? अगर सचमुच ऐसा समाज बनना चाहते हैं तो हमें हर स्त्री–पुरुष के लिए इतनी स्वतंत्रता सुनिश्चित करनी होगी कि वह भयमुक्त होकर अपने जीवन के बारे में खुद फैसला कर सके।

ब्रह्माण्ड से जुड़ो

जामिना गोम्स

धर्म-दर्शन

हम जो भी करते हैं, जितना अच्छे से अच्छा कर सकते हैं करना चाहिये। हम अपने चुने हुये व्यवसाय में या घर मे किये जाने वाले कामों में अपनी सारी संभावनाओं का इस्तेमाल करते हुये सर्वश्रेष्ठ होना चाहिये। एक किताब, नाटक, लेख या घर मे कुछ ऐसा है जो हमें जीवन के सर्वाधिक रचनात्मक मार्गों के संपर्क में लाता है, जो हमें दैवी की ओर ले जाता है। श्रेष्ठता के लिये प्रयास करने का मतलब चीजों को संपूर्णता से करना नहीं है। हम जीवन में जो प्राप्त करते हैं वह अपूर्णताओं से भरा होने के बावजूद उत्कृष्ट हो सकता है। उत्कृष्टता जिम्मेदारी निभाने और जिम्मेदार होने से आती है। अपने बगीचे या बाल्कनी के पौधों को ध्यान से देखो। वे जिस तरह है उसी रूप में उत्कृष्ट हैं। हो सकता है कि हम मशहूर लोगों की फेरिस्त में शामिल न हों या उन लोगों मे पहचाने जाये जो लोकप्रियता की उस फेहरिस्त मे शामिल हो गये हैं।

संपादकीय

दबाव नहीं, कारोबार

तब ट्रंप ने यहां तक कह दिया था कि भारत के साथ एक बहुत बड़ी ट्रेड डील होने वाली है। लेकिन उसके बाद हालात फिर से उलझने लगे और दोनों देशों के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत शुरू होने से ठीक पहले ट्रंप ने ट्वीट कर कहा कि अमेरिकी सामानों पर भारत का ऊंचा शुल्क अब और मंजूर नहीं किया जा सकता। जाहिर है, बातचीत की नाकामी के पीछे अमेरिका का यही अड़ियल रुख है। बताया जाता है कि अमेरिकी पक्ष चाहता था पहले भारत अमेरिकी सामानों पर शुल्क कम करे, उसके बाद बाकी मसलों पर बातचीत हो। लेकिन भारत ने शुल्कों में बढ़ोतरी अमेरिका द्वारा भारतीय सामानों को विशेषाधिकार प्राप्त वस्तुओं की सूची से निकाले जाने के जवाब में की है। ऐसे में अमेरिकी कदम वापस लिए जाने से पहले भारत से शुल्क कम करने को कहना जायज कैसे हो सकता है? दरअसल इस गतिरोध की जड़ें दोनों देशों के व्यापारिक संबंधों के स्वरूप में हैं। अभी दोनों देशों के बीच करीब 126 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार होता है जिसमें भारत का निर्यात 77.2 अरब डॉलर का है और आयात 48.8 अरब डॉलर का। इस लिहाज से अमेरिका के हिस्से सालाना 28.4 अरब डॉलर का व्यापार घाटा है। लेकिन यह कागजी तस्वीर हकीकत से मेल नहीं खाती। असलियत यह है कि यह सिर्फ वस्तुओं के व्यापार का हिसाब है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल और फेसबुक जैसी अमेरिकी कंपनियों को और खासकर अमेरिकी बैंकों, बीमा कंपनियों और संस्थागत निवेशकों को भारत से होने वाली कमाई को नजर में रखें तो यह व्यापार घाटा कहीं नहीं ठहरता। दिक्कत सिर्फ एक है कि अमेरिका को भारत से होने वाली यह बेहिसाब कमाई वहां रोजगार नहीं पैदा करती, और चुनावी राजनीति का तकाजा यह है कि रोजगार हर हाल में पैदा होते दिखने चाहिए।

आईआईटी की प्रवेश परीक्षा का स्वरूप अगर कोचिंग की जरूरत नहीं पैदा करता तो समाज के हर वर्ग की उसमें समान रूप से पहुंच होती।

हीरो बनाने की हद

आरती वर्मा

सुपर थर्टी के संस्थापक आनंद कुमार लगातार खबरों में बने रहने के बाद अभी खुद पर बनी बायोपिक को लेकर चर्चा में हैं। पटना में उनके काम को शोहरत इसलिए मिली कि उनके संस्थान के छात्र लगातार आईआईटी प्रवेश परीक्षा में सफल होते रहे हैं। आनंद गरीब परिवारों के बच्चों को न सिर्फ निरुशुल्क कोचिंग देते हैं बल्कि उनके खाने–रहने की व्यवस्था भी अपनी ओर से करते हैं। इस तरह उन्होंने बिहार के अनेक निर्धन परिवारों के जीवन में रोशनी बिखेरी और बहुतों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आज जब भारतीय मध्यवर्ग में आईआईटी जैसे संस्थानों में प्रवेश के लिए मारामारी मची है और कोचिंग पर लाखों खर्च किए जा रहे हैं, तब एक किसान या मजदूर के बच्चे को वहां तक पहुंचाना और उसके लिए अच्छी नौकरी के रास्ते खोलना वाकई असाधारण काम है।

आनंद ने साबित किया है कि समाज के हर तबके में ऊपर आने की क्षमता होती है लेकिन कमजोर घरों के बच्चे आगे नहीं आ पाते क्योंकि इस सिस्टम को पैसे से हाईजैक कर लिया गया है। आईआईटी की प्रवेश परीक्षा का स्वरूप अगर कोचिंग की जरूरत नहीं पैदा करता तो समाज के हर वर्ग की उसमें समान रूप से

पहुंच होती। लेकिन आज इन संस्थानों में ज्यादातर वही बच्चे दाखिला पा रहे हैं, जो लाखों की कोचिंग करते हैं। बहरहाल, आनंद की अपनी सीमा है। उन्होंने सिस्टम का विकल्प नहीं खोजा, अपने संकल्प से बने–बनाए सिस्टम का दायरा बढ़ा दिया। उनकी कोशिशों से इसमें उन मुट्ठीभर लोगों के लिए भी गुंजाइश बन पाई जो साधन के अभाव में इससे बाहर रह जाते। लेकिन आनंद कुमार का कद और बड़ा हो जाता, अगर वे इस दमघोंटू और तोतारटंत शिक्षा–परीक्षा प्रणाली को बदलने की दिशा में कोई दबाव बना पाते। सचाई यह है कि एंट्रेंस पेपर हल करने के मशीनी तरीके को ही उन्होंने चरम बिंदु तक पहुंचा दिया और शिक्षा को घुन की तरह खा रहे कोचिंग सिस्टम का एक पैरलल सब–सिस्टम खड़ा कर लिया।

देश के तमाम शिक्षाविद और विशेषज्ञ मानते हैं कि कोचिंग ने शिक्षा का बेड़ा गर्क कर दिया है। वैज्ञानिक उत्सुकता या तकनीकी पहल के लिए यहां कोई गुंजाइश नहीं रह गई है। बच्चे मशीन की तरह कोचिंग क्लासेज अटेंड करते जा रहे हैं, उनके जानलेवा रुटीन से बीमार हो रहे हैं, डिप्रेशन में जा रहे हैं, यहां तक कि आत्महत्या का रास्ता अपना रहे हैं। क्या ही अच्छा होता कि मुंबई फिल्म इंडस्ट्री अपनी कुछ रचनात्मकता भारत के वैज्ञानिकों, गणितज्ञों और असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वाले इंजीनियरों की कहानियां सुनाने में भी जाहिर करती। श्रीनिवास रामानुजन पर फिल्म देखने के लिए भी हमें हॉलिवुड का ही मुंह क्यों देखना पड़ता है? कैसी विडंबना है कि 2009 में केमिस्ट्री का नोबेल प्राइज जीतने वाले वेंकटरमन रामकृष्णन ने जिस कोचिंग इंडस्ट्री को भारत की साइंस–टेक्नॉलजी के लिए सबसे बड़ा विलेन बताया था, उसी में आज हमें हीरो नजर आ रहे हैं।

सूडोकु नवताल-5173

सरल

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5172 का हल

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7

अपना ब्लॉग

जोखिम लेकर आया है नया श्रीलंकाई निजाम

रंजीत कुमार। भारत के सागरीय इलाके में निकट के पड़ोसी द्वीप देश मालदीव और श्रीलंका हैं, जहां कुछ सालों से भारत समर्थक सरकारों की वजह से देश में राहत महसूस की जा रही थी। लेकिन श्रीलंका में बीते रविवार के चुनावी नतीजे भारत के लिए चिंताजनक भले न हों पर कम से कम आंखें खुली रखने की जरूरत जरूर बता रहे हैं। श्रीलंकाई नेताओं की रक्षा और विदेश नीति को लेकर भारत को इसलिए चिंता होती है कि यह द्वीप देश भारत के सागरीय और समुद्री व्यापारिक सुरक्षा हितों को संरक्षित रखने के नजरिये से काफी अहम है। श्रीलंका प्रायद्वीपीय भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित है और यह यूरोप से पूर्व एशिया तक के लिए अहम समुद्री व्यापारिक मार्ग के नजदीक है। यह खाड़ी से लेकर चीन, जापान और अन्य प्रशांत देशों के लिए तेल वाहक पोतों के प्रमुख सप्लाई मार्ग के निकट स्थित है। अमेरिका के लिए यह द्वीप देश इसलिए अहम है कि प्रशांत सागर से लेकर हिंद महासागर और खाड़ी के देशों तक इसके नौसैनिक संसाधनों की आवाजाही का यह प्रमुख मार्ग है।